चित्रः दुर्गा बाई

काजल मछली और किसान

एक किसान था। उसका खेत एक नदी के किनारे था। वह दिन भर खेत में काम करता रहता। जब प्यास लगती तो नदी में जाता और पानी पी लेता। उसकी बहिन रोज़ दोपहर उसके लिए खाना लेकरआ जाती। उस नदी में एक काजल नाम की मछली भी रहती थी। मछली को यह किसान बहुत अच्छा लगता था। बहुत ही अच्छा। एक दिन उसने किसान से कहा – मैं तुमसे दोस्ती करना चाहती हूँ। किसान और काजल मछली में दोस्ती हो गई।

अब रोज़ किसान अपना खाना लेकर नदी के किनारे चला आता। वह अपना पूरा खाना काजल मछली को खिला देता। इस तरह कई दिन बीत गए। किसान दोपहर में भूखा रहने के कारण दिन ब दिन दुबला होता जा रहा था। किसान की बहिन अपने भाई की हालत देखकर बहुत परेशान हो गई थी। वह सोचती रहती कि उसके भाई की ऐसी हालत क्यों हो रही है। एक दिन भाई को खाना देकर वह एक पेड़ के पीछे छुप गई। वह जानना चाहती है कि भाई उसके जाने के बाद क्या करता है। उसने देखा कि उसके जाते ही किसान नदी की तरफ चल पड़ा। किसान को क्या मालूम कि उसकी बहिन उस पर नज़र रखे हुए है। उसने रोज़ की तरह काजल मछली को आवाज़ दी। थोड़ी देर में काजल मछली आ गई। किसान उसे अपना खाना खिलाने लगा। किसान की हालत का भेद उसकी बहिन जान चुकी थी। उसने मन ही मन एक योजना बनाई। अगले दिन वह चुपचाप नदी किनारे गई। और काजल मछली को पकड़कर घर ले आई। जब किसान की बहिन मछली को पकड़ रही थी उस वक्त काजल मछली लगातार एक गीत गा रही थी, “मुझे छोड़ दो मैं तुम्हारे भाई की बीबी हूँ।” मछली को घर लाकर किसान की बहिन ने उसे पकाया।

रात हो चुकी थी। किसान भोजन करने के लिए बैठा था। उसने जैसे ही रोटी तोड़कर सब्ज़ी में डाली कि आवाज़ आई, “मैं तुम्हारी काजल मछली हूँ।” किसान यह आवाज़ पहचानता था। किसान बहुत दुखी हो गया। पर, अब वह कर भी क्या सकता था। एक बार फिर काजल की आवाज़ आई, “अगर मेरे टुकड़े उठाकर मुझे फिर से उसी नदी में छोड़ दो तो मैं फिर से जीवित हो जाऊँगी।” किसान ने वही किया। वह झट से नदी पहुँचा। सचमुच, काजल फिर से एक जीती-जीगती मछली बन गई। थोड़ी ही देर में किसान ने देखा काजल एक लड़की बन गई है। कहते हैं फिर वह पूरी उमर किसान के परिवार के साथ रही। वह किसान के साथ खेत जाती और दोनों वहाँ काम करते।